संस्कार संवर्धन की क्रियायें

दैनिक –

सुव्यस्थित एवं नियमित दिनचर्या, गर्भस्थ शिशु से नियमित संवाद करना जैसे उससे बात की जा रही हो, भाँति भाँति के प्रेरक गीत गाकर सुनाये जायें, जीवनचर्या में उपासना, साधना, आराधना का नियमित समावेश किया जाये, दैनिक जीवन में साधना स्वाध्याय संयम सेवा का समावेश कर मानवीय मूल्यों एवं उच्च आदर्शों की प्रेरणा हेतु महापुरुषों की जीवनी, प्रेरणाप्रद एवं सत्साहित्य का पठन पाठन किया जाये, दोषों से बचने का प्रयास, तत्वबोध आत्मबोध की साधना, निर्धारित समय पर मंत्र श्रवण-उच्चारण करना, आहार विहार पर नियंत्रण- सुपाच्य, पौष्टिक अर्थात् हितभुक् मितभुक् ऋतभुक् का ध्यान रहे, दैनिक योग व्यायाम प्राणायाम मुद्रा अभ्यास आदि करना, संध्याकालीन परिवारिक गोष्ठी करना आदि।

साप्ताहिक –

प्रति रविवार यज्ञ कर्म सम्पन्न हो, किसी देव स्थान पर दर्शन का नियमित क्रम हो इससे विचार सात्विक बने रहते हैं, मनोरंजन हेतु किसी रमणीक स्थान पर जायें।

मासिक –

भावी माता व शिशु के उत्तम स्वास्थ हेतु नियमित चिकित्सकीय जांच परामर्श का क्रम

त्रैमासिक –

1. दम्पत्ति शिविर, सन्तानोत्पत्ति हेतु इच्छुक नव दम्पत्तियों को अनुशासन प्रतिबंध, तपपूर्ण जीवन हेतु प्रेरणा
2. पुंसवन संस्कार कराना - तृतीय मास में गर्भिणी और परिवार को आवश्यक निर्देश, गर्भपूजन, औषधि अवघ्राण चरु ग्रहण व आश्वास्तना
3. सीमन्तोन्नयन संस्कार - सप्तम मास में भावी माता का सम्मान और ईश्वर के राजकुमार का अभिनंदन, सुखद प्रसव हेतु निर्देश

परिवारजनों हेतु निर्देश –

भावी माता की नियमित दिनचर्या, सकारात्मक व सात्विक वातावरण के निर्माण हेतु घरवालों द्वारा वैचारिक भावनात्मक सहयोग देना, पारिवारिक पंचशीलों का अनिवार्य रूप से अनुपालन।

समय की माँग और हमारे दायित्व–

1. शक्तिपीठ पर दंपत्ति शिविर का आयोजन या नव दंपत्ति शिविर लगाना।
2. सतत परामर्श हेतु पंजीयन।
3. गर्भसंस्कारों का समयानुकूल आयोजन एवं उसमें चिकित्सकीय जांच परामर्श की निशुल्क व्यवस्था करना।
4. मास के किसी भी रविवार को सामूहिक संस्कार आयोजन करना।
5. इसे एक व्यापक जन आंदोलन बनायें।

हमारा अभियान –

जन्मोपरांत शिशु के शेष संस्कार समयानुसार सम्पन्न करायें, बाल संस्कार शाला के माध्यम से उन संस्कारों को पुष्ट करने का कार्य हो, संस्कृति मण्डल - युवा मण्डल, प्रज्ञा / महिला के माध्यम से महामानवों की एक समग्र पीढ़ी का निर्माण संभव है ।

आओ गढ़े संस्कारवान पीढ़ी–यह अभियान देशव्यापी बनाया जा रहा है। प्रत्येक संगठन मंडल आदि इस अभियान को संस्कार शाला के साथ प्रत्येक ग्राम, नगर में फैलाये। यह युग निर्माण अभियान का आधारभूत कार्यक्रम कहा जा सकता है। जिस प्रकार से अच्छी कृषि हेतु उन्नत किस्म के बीजों को उपयोग किया जाता है इसी प्रकार से एक श्रेष्ठ पीढ़ी के निर्माण हेतु गर्भ संस्कार के माध्यम से कार्य किया जा सकता है।

अखिल विश्व गायत्री परिवार,
शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार 249 411
फोन : 01334 260602 , 09258360652
email : youthcell@awgp.org
website : www.awgp.org

संस्कार परम्परा का पुनर्जीवन

आओ गढ़ें .... संस्कारवान पीढ़ी

गर्भ संस्कार

विश्व के नवनिर्माण के लिये एक संपूर्ण पीढ़ी के निर्माण की आवश्यकता है। व्यक्ति से समाज, समाज से देश और देशों से विश्व का निर्माण होता है। वर्तमान परिवर्तन के दौर में मनुष्य ने साधन सुविधाओं के अम्बार खड़े कर लिये हैं परन्तु सच्चे और अच्छे संस्कारवान मनुष्यों के अभाव में सुख शांति का लक्ष्य कोसों दूर है। प्रश्न यह है कि अच्छे और सच्चे संस्कारवान मानव का निर्माण कैसे हो? ऋषि प्रणीत संस्कार परम्परा ही इसका एकमात्र समाधान है जिसमें जन्म पूर्व से ही जीवात्मा के संस्कार संवर्धन की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। विज्ञान की दृष्टि से देखा जाये तो मानव की अधिकांश विकास यात्रा जन्म से पूर्व गर्भ से ही आरम्भ हो जाती है जिसमें ज्ञानेन्द्रियों, कर्मेन्द्रियों का विकास हो जाता है। हमारे प्राचीन ऋषियों ने इसे हजारों वर्ष पूर्व समझ लिया था इसीलिये इस संस्कार रोपण की प्रक्रिया का शुभारम्भ गर्भाधान संस्कार से किया गया था। आज का आधुनिक विज्ञान भी इस बात को समझ चुका है और इसकी पुष्टि भी करता है। अतः समग्र पीढ़ी के निर्माण का शुभारम्भ इसी अवस्था से करना होगा।

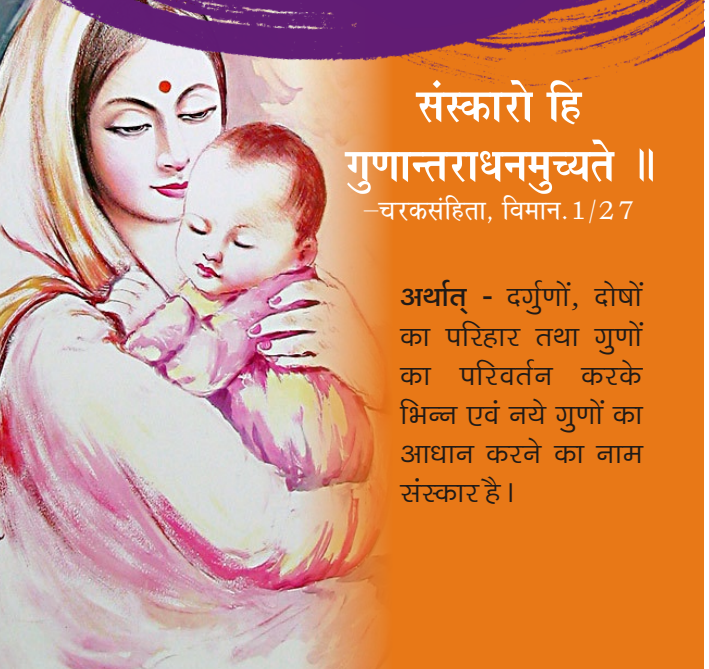

संस्कारो हि गुणान्तराधनमुच्यते ॥

–चरकसंहिता, विमान. 1/27

अर्थात् - दर्गुणों, दोषों का परिहार तथा गुणों का परिवर्तन करके भिन्न एवं नये गुणों का आधान करने का नाम संस्कार है।

क्या गर्भकाल से ही शिशु का प्रशिक्षण सम्भव है ?

आयुः कर्म च वित्तं च विद्या निधनमेव च।
पञ्चैतान्यपि सृज्यन्ते गर्भस्थस्यैव देहिनः॥

अर्थात् - आयु, कर्म, धन, विद्या और मृत्यु गर्भ में रच जाती है।

हाँ, यह पूर्णरूप से सम्भव है क्योंकि इसके सशक्त प्रमाण प्राचीन भारत में अनेक स्थानों पर उपलब्ध हैं।

संस्कृति

माता पिता से केवल शरीर ही नहीं प्राप्त होता, मन और संस्कार भी प्राप्त होते हैं। ऋषियों ने जीवात्मा के जन्म जन्मान्तरों एवं माता पिता के संसर्ग से उत्पन्न दोषों के परिमार्जन तथा शुभ संस्कारों के रोपण का कार्य गर्भाधान के साथ ही सम्पन्न करने का विधान बनाया था। गर्भाधान पुंसवन एवं सीमन्तोन्नयन संस्कार इसी प्रक्रिया के अंग हैं। शिशु के शरीर और मन का संगठन उसके जन्म के उपरांत नहीं अपितु गर्भावस्था से ही आरम्भ हो जाता है।

वैदिक और पौराणिक साहित्य में इस बात पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध हैं जैसे- शुकदेव और अष्टावक्र को ब्रह्मज्ञान का प्रशिक्षण, माँ सुभद्रा द्वारा पुत्र अभिमन्यु को गर्भकाल में चक्रव्यूह भेदन का ज्ञान, सुनीति द्वारा ध्रुव को, जीजाबाई द्वारा शिवा का लालन-पालन, सीता द्वारा लव कुश का, कयाधु द्वारा प्रहलाद का, शकुन्तला द्वारा भरत का शिक्षण इसी का प्रमाण है।

विज्ञान

आधुनिक विज्ञान भी भारतीय ऋषियों की परंपरा का पूर्ण समर्थन कर रहा है। इन दिनों यंत्र उपकरणों व विविध गतिविधियों के माध्यम से गर्भिणी के आवेग-संवेग का शिशु पर स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है एवं गर्भिणी के साथ किये गये व्यवहार अथवा सुख दुख की परिस्थितियों में शिशु को प्रतिक्रिया व्यक्त करते देखा जा सकता है। अनेक देशों में इस वैज्ञानिक शोध को आधार बनाकर इच्छित संतति प्राप्त करने हेतु तंत्र खड़े किये गये हैं ।

ऋषि परम्परा का पुनर्जीवन : क्या करें – कैसे करें ?

युग ऋषि पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा संस्कार परम्परा के पुनर्जीवन का महत्वपूर्ण कार्य किया है। इन दिनों 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' आंदोलन के माध्यम से इसे विश्वव्यापी बनाने की योजना तैयार की गई है। चूँकि इन दिनों गर्भाधान संस्कार देश काल परिस्थिति के अनुसार व्यवहार्य नहीं बन पड़ता है अतः इसके स्थान पर -

- दम्पत्ति शिविर के माध्यम से माता पिता को आवश्यक शिक्षण प्रशिक्षण दिया जाता है।
- गर्भाधान के उपरांत सम्पूर्ण गर्भकाल हेतु गर्भ संस्कार प्रक्रिया के अन्तर्गत दैनिक, साप्ताहिक, मासिक एवं त्रैमासिक अन्तराल पर भावी माता-पिता एवं परिवार को आवश्यक शिक्षण दिया जाना आवश्यक है।